IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

लिंग के आधार पर किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

- डॉ. सुनीता बोकडे, प्राचार्य, खालसा कॉलेज,दुर्ग, छत्तीसगढ।
- श्रीमती अनीता कालमेघ सहायक प्राध्यापक

के. डी. रूंगटा कॉलेज ऑफ साइंस एंड टेक्नालॉजी, अटारी, रायपुर, छत्तीसगढ।

सारांश

प्रस्तुत में अध्ययन में विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि का अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु छत्तीसगढ राज्य के रायपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय उ.मा.विद्यालयों में अध्ययनरत 260 सामान्य छात्र एवं छात्राओं का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया। शोध हेतु डॉ देवेन्द्र सिंह सिसोदिया एवं पूजा चौधरी द्वारा निर्मित मनोवैज्ञानिक समृद्धि मापनी का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु टी मूल्य ज्ञात किया गया। निष्कर्ष में छात्र एवं छात्राओं के मनोवैज्ञानिक समृद्धि में सार्थक अंतर नही पाया गया।

मुख्य शब्द– मनोवैज्ञानिक समृद्धि , स्वायत्ता, योग्यता ,आत्मस्वीकृति।

प्रस्तावना – मनोवैज्ञानिक समृद्धि किसी व्यक्ति या समूह की मानसिक अवस्था उत्तम कहलाने से है। मनोवैज्ञानिक समृद्धि व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण को संदर्भित करता है, जिसमें दूसरों के साथ संबंध एवं स्वयं के दृष्टिकोण शामिल हो सकते हैं, जिसमें स्वामित्व एवं व्यक्तिगत विकास की भावना शामिल है। मनोवैज्ञानिक समृद्धि जीवन में खुशी या संतुष्टि जैसे भावनात्मक स्थिति को दर्शाती है।

किशोरावस्था जीवन की सबसे कठिन अवस्था मानी जाती है। इस अवस्था में किशोरों में भावनात्मक अस्थिरता अधिक पाई जाती है। संवेगो में अत्यधिक परिवर्तन के कारण अचानक ही वे अत्यधिक प्रसन्न होते हैं, तो छोटी सी बात पर चिंताग्रस्त परेशान और निराश हो जाते हैं। छात्र एवं छात्राओं पर विघालय के वातावरण, घर के वातावरण, मित्रों, शिक्षको एवं पालकों का सकारात्मक और नकारात्मक व्यवहार आदि का उनके मनोवैज्ञानिक समृद्वि का अलग अलग प्रभाव पडता हैं। छात्र एवं छात्राओं के विचार एवं दृष्टिकोण में अंतर पाया जाता हैं इसीलिए प्रस्तुत शोध में लिंग के आधार पर किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्वि का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

शर्मा एवं शर्मा (2018)ने कॉलेज के छात्रों के बीच इंटरनेट की लत और मनोवैज्ञानिक समृद्वि के मध्य क्रास सेक्शलन स्टडी में इंटरनेट की लत का मनोवैज्ञानिक समृद्वि पर नकारात्मक प्रभाव पाया । **भट्ट (2018)** ने स्कूली पर्यावरण और रहने के स्थान के संबंध में किशोरों के इंटरनेट की लत और मनोवैज्ञानिक कल्याण का अध्ययन कश्मीर घाटी के 519 स्कूली छात्रों पर किया निष्कर्ष में मनोवैज्ञानिक समृद्वि एवं स्कूली माहौल में बहुत कम सकारात्मक सहसंबंध पाया। **पोद्दार, चंद्रशेखर, ओढोर, आर. मोहिते (2019)** ने महाराष्ट्र के अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 600 विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्वि के स्तर का पता लगाया, जिसमें 58.7 प्रतिशत मनोवैज्ञानिक रूप से स्वस्थ्य पाए गए तथा 41.3 प्रतिशत छात्र में मनोवैज्ञानिक परेशानी पाई गई।

अध्ययन का उद्देश्य

लिंग के आधार पर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्वि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना –

H0– लिंग के आधार पर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्वि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

उपकरण

प्रदत्तों के संकलन हेतु देवेन्द्र सिसोदिया एवं पूजा चौधरी द्वारा निर्मित मनोवैज्ञानिक समृद्वि मापनी का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन हेतु छत्तीसगढ राज्य के रायपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चत्तर. माध्यमिक. विद्यालयों में अध्ययनरत 260 विद्याार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

परिसीमा

प्रस्तुत अध्ययन में छत्तीसगढ राज्य के रायपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चत्तर. माध्यमिक. विद्यालयों के कक्षा 11वीं एवं 12 वीं में अध्ययनरत 16 से 18 आयु वर्ग के 260 छात्र छात्राओं के मनोवैज्ञानिक समृद्वि के अध्ययन तक सीमित है।

शोध प्रविधि – प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु सर्वेक्षण अनुसंधान प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

सांख्यकीय विश्लेषण –

शोध कर्ता द्वारा प्रदत्त संकलन पश्चात् सांख्यकीय विश्लेषण हेतु दोनो समूहों के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मूल्य ज्ञात किया गया, जिसे सारिणी क्रमांक 1 में दर्शाया गया है।

सारिणी क्रमांक 1

लिंग के आधार पर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्वि का सांख्यकीय विश्लेषण का विवरण–

क्रमांक	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य
1	छात्राएँ	130	174.15	13.14	1.18
2	छात्र	130	172.23	13.07	

Df= 258 N=260

सार्थक अंतर नहीं है।

उपरोक्त सारिणी क्रमांक 1 से स्पष्ट है कि छात्राओं के मनोवैज्ञानिक समृद्वि का मध्यमान 174.15 तथा प्रमाणिक विचलन 13.14 पाया गया। छात्रों के मनोवैज्ञानिक समृद्वि का मध्यमान 172.23 तथा प्रमाणिक विचलन 13.07 पाया गया। मध्यमान की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी मान की गणना की गई जिसका मान 1.18 प्रापत हुआ जो कि 0.05 सार्थकता स्तर के आवश्यक मान 1.97 से कम है, जो यह दर्शाता हे कि छात्र एवं छात्राओं के छात्राओं के मनोवैज्ञानिक समृद्वि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया । अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष–

छात्र एवं छात्राओं के मनोवैज्ञानिक समृद्वि के मध्यमान में सार्थक अंतर न होना यह दर्शाता है कि वर्तमान समय में छात्र एवं छात्राओं का पारिवारिक वातावरण, अभिभावकों का सकारात्मक व्यवहार लडको एवं लडकियों के व्यक्तिगत विकास में समान भूमिका निभाते हैं, जिससे छात्र एवं छात्राओं के मनोवैज्ञानिक समृद्वि में अंतर नही पाया गया।

शैक्षिक महत्व – मनोवैज्ञानिक समृद्वि का जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है मानसिक रूप से संतुष्ट होने पर इसका छात्रों के अध्ययन को प्रभावित करता है जिससे शिक्षा में सफलता निश्चित है, जो कि जीवन में आगे बढने के लिए आवश्यक है।

संदर्भ

फहमी, आर.बी. एवं जघौल, एल.एच.(2006). जार्डडियन टीइएफएल ग्रेजुएट स्टुडेंट यूज ऑफ क्रिटिकल थिंकिंग स्किल्स. *द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बाइलिंग्वुअल एजुकेशन एंड बाइलिंग्वुअलिज्म.*9(1),33–50.

भट बी. ए. (2018). ए स्टउी ऑफ साइकॉलाजिकल वे बीइंग एडोलसेन्ट इन रिलेशन टू स्कूल इन्वॉयरमेंट एंड प्लेस ऑफ लिविंग. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मूवमेंट एजुकेशन एंड सोशल साइंस* ,7(2),605–611.

राइफ सी. डी. सिंगर बी. एच. एवं लव.जी. डी.(2004). पाजिटिव हेल्थ : कनेक्टिव वेल बीइंग विथ बायोलॉजी.*फिलासाफिकल ट्रांसक्शन ऑफ द रॉयल सोसायटी*,359,1383–1394.

रॉक्स, ली एवं एंटोनेट (2004).एन एनालिसिस ऑफ साइकॉलाजिकल वेल बीइंग फ्राम एन एजुकेशनल साइकॉलाजी पर्सपेक्टिव. *यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ अफ्रीका द्व प्रिटोरिका* ,1–4.

शर्मा एवं शर्मा (2018). इंटरनेट एडिक्शन एंड साअकॉलाजिकल वगलबीइंग अमंग कॉलेज गोइंग स्टुडेंट ए क्रास सेक्शनल स्टडी फ्राम सेंटल इंडिया. *फैमली मेड प्रिम केयर,*7(1),147–151.